

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउण्डेशन

ऋग्वेद (१.३५.७) : मन्त्र एवं विस्तृत भाष्य

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल

सम्पर्क: 8756390767

मन्त्र एवं पाठ परिचय

वि सुपर्णो अन्तरिक्षाय ख्यद्गभीरवेषा असुरः सुनीथः ।
क्वेदानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ॥ ७

पदपाठः

वि । सुपर्णः । अन्तरिक्षाणि । अख्यत् । गभीरवेषाः । असुरः । सुनीथः । क्व । इदानीम् । सूर्यः । कः । चिकेत । कतमाम् । द्याम् ।
रश्मिः । अस्य । आ । ततान् ॥ ७

1. सायणाचार्य के भाष्य के अनुसार

शब्दार्थ (सायण मतानुकूल)

- **सुपर्णः**: सुन्दर गति वाले अथवा निघण्टु के अनुसार पन्द्रह रश्मिनामों में पठित होने के कारण 'सूर्य की किरण'।
- **अन्तरिक्षाणि**: अन्तरिक्ष से उपलक्षित लोकत्रय के स्थानों को।
- **वि अख्यत्**: विशेष रूप से प्रकाशित किया।
- **गभीरवेपाः**: गम्भीर कम्पन या गति वाला, जिसका चलना किसी के द्वारा आसानी से न देखा जा सके।
- **असुरः**: सबको प्राण देने वाला (जैसा कि तैत्तिरीय आरण्यक में कहा है—'सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेति')।
- **सुनीथः**: मार्ग का प्रकाश करके अभीष्ट स्थान पर पहुँचाने वाला (सुनयन)।
- **इदानीम्**: इस समय (रात्रिकाल में)।
- **सूर्यः**: सूर्य और उसकी रश्मियाँ।
- **क्वः**: कहाँ रहता है?
- **कः चिकेतः**: इसे कौन जानता है? अर्थात् कोई नहीं जानता।
- **अस्य**: इस सूर्य का।
- **रश्मिः**: रश्मि (किरण)।
- **कतमाम् द्याम्**: किस द्युलोक को।
- **आ ततानः**: व्याप्त किया है या फैला हुआ है?

हिन्दी अनुवाद (सायणाचार्य पक्ष)

सुन्दर गति वाले, गम्भीर कम्पन (अदृश्य गति) वाले, सबके प्राणदाता और उत्तम मार्ग दिखाने वाले सूर्य की किरणों रूपी सुपर्ण ने (दिन में) तीनों लोकों को भली-भाँति प्रकाशित किया। (परन्तु अब रात्रि के समय) यह सूर्य इस समय कहाँ है? इस रहस्य को कौन जानता है? और इस सूर्य की कौन सी किरण किस द्युलोक को व्याप्त कर रही है—इस बात को भी कौन जानता है?

व्याकरण (सायण पक्ष)

- **सुपर्णः**: 'नञ्सुभ्याम्' (पा. सू. ६.२.१७२) से उत्तरपद आन्तोदात्त।
- **गभीरवेपाः**: 'टुवेपृ कम्पने' धातु से 'असुन्' प्रत्यय। 'गम्भीरं वेपो यस्य' इस बहुव्रीहि समास में पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्व।
- **असुरः**: 'असु क्षेपणे' धातु से 'असेरुन्' (उणादि १.४२) से उरन् प्रत्यय (निच् होने से आद्युदात्त)। अथवा 'असून् प्राणान् राति' से 'आतोऽनुपसर्गे कः' (पा. सू. ३.३.१०६) से कप्रत्यय।
- **सुनीथः**: 'णीञ् प्रापणे' धातु से 'हनिक्वुषिनीरमिकाशिभ्यः कथन्' (उणादि २.१५९) से कथन् प्रत्यय। प्रादि समास में उत्तरपदान्तोदात्त।
- **इदानीम्**: 'इदम्' शब्द से सप्तम्यर्थ में 'दानीं च' (पा. सू. ५.३.१८) से दानीम् प्रत्यय और 'इदम् इश्' आदेश।
- **सूर्यः**: 'भू प्रेरणे' धातु से रुडागम सहित क्यप् प्रत्यय निपातित। धातुस्वर से आद्युदात्त।

- **चिकेतः**: 'कित ज्ञाने' धातु से लिट् लकार का रूप।
- **कतमाम्**: 'वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्' (पा. सू. ५.३.९३) से किम् शब्द से डतमच् प्रत्यय (डित् होने से टिलोप, अन्तोदात्त)।

2. ऋषि दयानन्द सरस्वती के भाष्य के अनुसार

अन्वय (दयानन्द पक्ष)

हे विद्वन्! यथा असुरः गभीरवेपाः सुनीथः सुपर्णः अस्य रश्मिः अन्तरिक्षाणि व्यख्यत् (विख्यापयति प्रकाशयति), तेन रश्मिगणेन युक्तः सूर्यः इदानीं क्व वर्तते? एतत् कः चिकेत (को जानाति)? कतमां द्याम् अस्य सूर्यस्य रश्मिः आ ततान, एतत् अपि कः चिकेत? कश्चिद् एव जानाति न तु सर्वे, तत् एतत् त्वम् अवेहि ॥७॥

शब्दार्थ (दयानन्द मतानुकूल)

- **वि**: विशेषार्थे (विशेष रूप से)।
- **सुपर्णः**: सुन्दर गति और गमनशील किरणें हैं जिसकी (निघण्टु १.५ के अनुसार रश्मिनाम)।
- **अन्तरिक्षाणि**: अन्तरिक्षस्थानि सर्वाणि भुवनानि (अन्तरिक्ष में स्थित सभी लोक)।
- **अख्यत्**: विशेष रूप से प्रकाशित करता है।
- **गभीरवेपाः**: जो विद्वानों द्वारा भी कठिनाई से लक्षित होने योग्य गम्भीर कम्पन या गति वाला है ('टुवेपृ कम्पन' धातु से 'असुन्' प्रत्यय)।
- **असुरः**: सबको प्राण देने वाला अथवा प्राणों में रमने वाला।
- **सुनीथः**: जिससे पदार्थों की उत्तम प्राप्ति और श्रेष्ठ मार्ग का नयन होता है ('णीञ् प्रापणे' से 'क्थन्' प्रत्यय)।
- **क्व**: कुत्र (कहाँ)।
- **इदानीम्**: अस्मिन् समये वर्तमानायां रात्रौ (रात्रिकाल में)।
- **सूर्यः**: वह सूर्य।
- **कः**: कौन (विद्वान्)।
- **चिकेत**: केतति जानाति ('कित ज्ञाने' धातु से लङ् लकार)।
- **कतमाम्**: बहूनां पृथिवीनां मध्ये काम् (बहुत से लोकों में से किस)।
- **द्याम्**: द्योतनात्मिकाम् (प्रकाशमय द्यूलोक को)।
- **रश्मिः**: ज्योतिः (किरण)।
- **अस्य**: इस सूर्य की।
- **आ ततान**: समन्तात् तनोति विस्तृणोति (भली-भाँति व्याप्त करता है)।

हिन्दी अनुवाद (ऋषि दयानन्द पक्ष)

हे विद्वान्! जैसे वह असुर (सबको प्राण देने वाला), गभीरवेपा: (अदृश्य या अज्ञेयों द्वारा कठिनाई से जाने जाने वाले कम्पन/गति वाला), सुनीथ: (उत्तम मार्ग दिखाने वाला) और सुपर्ण: (शोभन किरणों वाला) सूर्य अपनी किरणों से अन्तरिक्ष में स्थित सभी लोकों को विशेष रूप से प्रकाशित करता है, (वैसा वह सूर्य) रात्रि के समय कहाँ विद्यमान रहता है? इस रहस्य को कौन जानता है? तथा इस सूर्य की कौन सी किरण किस प्रकाशमय द्युलोक को भली-भाँति व्याप्त करती है—इस बात को भी कौन जानता है? (अर्थात् इसे कोई विशिष्ट ज्ञानी ही जानता है, सब नहीं)।

मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach & Helioseismology)

यह मन्त्र केवल दार्शनिक या पौराणिक रहस्य नहीं, बल्कि आधुनिक खगोल भौतिकी (Astrophysics) और सौर भूकम्पविज्ञान (Helioseismology) के कई मूल सिद्धांतों से अद्भुत रूप से मेल खाता है:

गभीरवेपा: (Deep Solar Vibrations / Helioseismic Waves):

मन्त्र में सूर्य को 'गभीरवेपा:' (गम्भीर कम्पन या सूक्ष्म गति वाला) कहा गया है। आधुनिक विज्ञान यह सिद्ध करता है कि सूर्य एक स्थिर ठोस पिंड नहीं है, बल्कि इसके भीतर प्लाज्मा की लगातार उथल-पुथल से सूक्ष्म ध्वनि तरंगें (Pressure/Sound Waves) पैदा होती हैं। सूर्य की सतह और अंदरूनी भाग लगातार 5-मिनट के चक्र में कंपन (Vibration) करते रहते हैं। इन आंतरिक कंपनों को केवल अत्याधुनिक अंतरिक्षीय उपकरणों (जैसे Doppler shifts) से ही मापा जा सकता है, जो आम आँखों या सतही तौर पर 'अदृश्य' (गम्भीर) हैं।

सुपर्ण: रश्मियुक्त: अन्तरिक्षाण्यख्यत् (Solar Radiation & Space Mapping):

सूर्य की किरणें (सुपर्ण: रश्मि:) अंतरिक्ष के सभी लोकों (अन्तरिक्षाणि) को कैसे आलोकित करती हैं, इसका वर्णन आधुनिक सोलर फिजिक्स के सोलर रेडिएशन और सोलर विंड (Solar Wind/Plasma propagation) से मेल खाता है।

"क्व इदानीं सूर्यः... कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान" (The Hidden Far-side & Stellar Mystery):

जब पृथ्वी के सामने वाले हिस्से पर दिन होता है, तब सूर्य का दूसरा हिस्सा (Far-side of the Sun) पृथ्वी से ओझल रहता है। प्राचीन काल में यह एक रहस्य था कि रात्रि या दूसरी ओर सूर्य कहाँ और किस स्थिति में है। आज भी स्पेस साइंस में 'Far-side Imaging' (हिलियोसिस्मोलॉजी के जरिए सूर्य के पिछले हिस्से की थाह लेना) एक जटिल विज्ञान है। मन्त्र का यह प्रश्न— "इस सूर्य की किरण किस द्युलोक को व्याप्त कर रही है और इस रहस्य को कौन जानता है?"—ब्रह्मांड के उस गूढ़ भौतिक सत्य को दर्शाता है जिसे आज भी वैज्ञानिक अंतरिक्ष यानों के माध्यम से पूरी तरह डिकोड करने का प्रयास कर रहे हैं।